Dr. Nutisri Dubey
Assistant Professor
Dept. of Philosophy
H.D. Jain College, Ara

U.G. IV
MJC – 05: Western Philosophy

Spinoza – 'Substance'

स्पिनोजा के अनुसार 'द्रव्य' (Substance) का स्वरूप

स्पिनोजा अपने दर्शन का प्रारंभ द्रव्य (Substance) से करते हैं। उनके अनुसार ईश्वर एक निरपेक्ष द्रव्य है। द्रव्य क्या है? स्पिनोजा कहते हैं–

"द्रव्य वह है जो अपने में रहता है और अपने द्वारा समझा भी जाता है" अर्थात् इसके ज्ञान के लिए किसी वस्तु के ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती है।

द्रव्य की परिभाषा से स्पष्ट है कि द्रव्य अपने अस्तित्व और ज्ञान के लिए किसी दूसरी वस्तु पर आश्रित नहीं होता है। द्रव्य की इस परिभाषा के आधार पर द्रव्य के विषय में कुछ निष्कर्ष निगमित किये जा सकते हैं।

चूँकि प्रत्येक वस्तु अपने अस्तित्व और ज्ञान के लिए द्रव्य पर आश्रित है इसलिए केवल द्रव्य ही अपने ऊपर निर्भर हो सकता है। इससे सिद्ध होता है कि द्रव्य 'स्वतंत्र' है। स्पिनोजा के दर्शन में स्वतंत्रता का प्रयोग आत्मनिर्धारण के अर्थ में किया गया है। इस दृष्टि से द्रव्य अपने स्वभाव के विरुद्ध कार्य नहीं कर सकता। सृष्टि की प्रत्येक वस्तु द्रव्य के स्वभाव से तर्कत: निगमित होती है। चूँकि द्रव्य अपने अस्तित्व और ज्ञान के लिए किसी अन्य तत्व पर निर्भर नहीं है, इसलिए यही एकमात्र परम सत्ता है। इससे स्पष्ट है कि निरपेक्ष द्रव्य ही ईश्वर है। द्रव्य की इस परिभाषा से यह भी सिद्ध होता है कि ईश्वर एक है। यदि एक से अधिक द्रव्यों की सत्ता माना जाय तो उनकी स्वतंत्रता सीमित हो जाती है। द्रव्य की अनेकता उसकी स्वतंत्रता की बाधक है। इस प्रकार ईश्वर स्वतन्त्र, अद्वितीय एवं एक निरपेक्ष द्रव्य है।

स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य प्रत्येक वस्तु का आदि कारण है। यदि द्रव्य को आदि कारण या स्वयंभू न माना जाय तो एक वस्तु दूसरी का, और दूसरी वस्तु तीसरी वस्तु का कारण होगी। इस क्रम में 'अनवस्था दोष' नहीं बचा जा सकता है। इसके अतिरिक्त यदि द्रव्य के कारण रूप में किसी अन्य तत्व को माना जाय तो द्रव्य की स्वतन्त्रता और निरपेक्षता की रक्षा नहीं की जा सकती है।

द्रव्य की परिभाषा के अनुसार द्रव्य अपने ज्ञान और अस्तित्व के लिए आत्मनिर्भर है। इससे सिद्ध होता है कि द्रव्य स्वतः सिद्ध है। उसके ही प्रकाश से प्रत्येक वस्तु आलोकित होती है। वह सृष्टि के कण-कण में अपने को अभिव्यक्त करता है। दूसरे शब्दों में द्रव्य (ईश्वर) अन्तर्यामी है। 'द्रव्य (ईश्वर) सब में है और सब कुछ द्रव्य के अन्तर्गत है।' यह दृष्टि स्पिनोजा को सर्वेश्वरवाद की ओर ले जाती है। चूँकि स्पिनोजा का द्रव्य 'पूर्ण', अर्थात आप्तकाम है, अतः उसे किसी अन्य वस्तु की आवश्यकता नहीं है। यदि द्रव्य को पूर्ण न माना जाय तो उसकी निरपेक्षता और स्वतन्त्रता बाधित हो जाती है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि द्रव्य असीम है क्योंकि उसे सीमित करने वाली कोई वस्तु नहीं है। इसी कारण स्पिनोजा ने द्रव्य को 'अनन्त' कहा है।

द्रव्य के निर्गुण होने से उसकी अनिर्वचनीयता भी सिद्ध होती है। स्पिनोजा का यह कथन प्रसिद्ध है - 'प्रत्येक निर्वचन निषेधात्मक होता है।' (Every Determination is Negation).

स्पिनोजा के अनुसार किसी वस्तु के गुणों का विवेचन करना उसमें अन्य गुणों का निषेध करना होता है। जैसे, जब हम कहते हैं कि गाय सफेद है, तो उसके लाल, पीला, हरा, नीला आदि रंगों का निषेध हो जाता है। स्पिनोजा के अनुसार किसी वस्तु के गुणों का वर्णन करने से वह वस्तु उन गुणों से सीमित हो जाती है। चूँकि द्रव्य असीमित और पूर्ण है, इसलिए गुणों के आधार पर उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है। इसकी तुलना शंकराचार्य के इस कथन से की जा सकती है — 'यदि सीमित (अपूर्ण) मानव असीमित ब्रह्म को समझ सकता है तो या तो उसका बोध तात्विक रूप में अनन्त है, अथवा ब्रह्म अनन्त नहीं हो सकता है।' अपने श्रीमद्भगवद-गीता भाष्य में आचार्य शंकर कहते हैं — 'प्रत्येक शब्द किसी वस्तु का संकेत उस वस्तु की किसी न किसी जाति, गुण, कर्म अथवा संबंध की किसी वृत्ति विशेष के साथ साहचर्य युक्त होकर ही कर सकता है। किन्तु ब्रह्म में कोई गुण, जाति, संबंध, कर्म आदि नहीं है।' इससे स्पष्ट है कि शंकराचार्य के ब्रह्म के समान स्पिनोजा का द्रव्य भी अवर्णनीय है। शंकर के ब्रह्म के समान स्पिनोजा का द्रव्य भी निर्गुण है। अतः उसका वर्णन भाषा के द्वारा नहीं किया जा सकता है। अनन्त (असंख्य) गुणों से युक्त होने के कारण स्पिनोजा अपने द्रव्य को निर्गुण और अनिर्वचनीय कहते हैं। यही कारण है कि वह निरपेक्ष द्रव्य का संकेत करने के लिए माध्यमिक बौद्धों और अद्वैत वेदान्तियों के समान निषेधात्मक पद्धति का प्रयोग करते हैं। 'नेति-नेति' (Not this-Not this) ही स्पिनोजा के ईश्वर और शंकर के ब्रह्म का सर्वोत्तम निर्वचन है। यह निर्विशिष्ट तत्व अपरोक्षानुभूति अथवा प्रज्ञात्मक ज्ञान (Intuitive experience) का विषय है।